सत्यान्वेषी आ. कनकनन्दी जी का

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

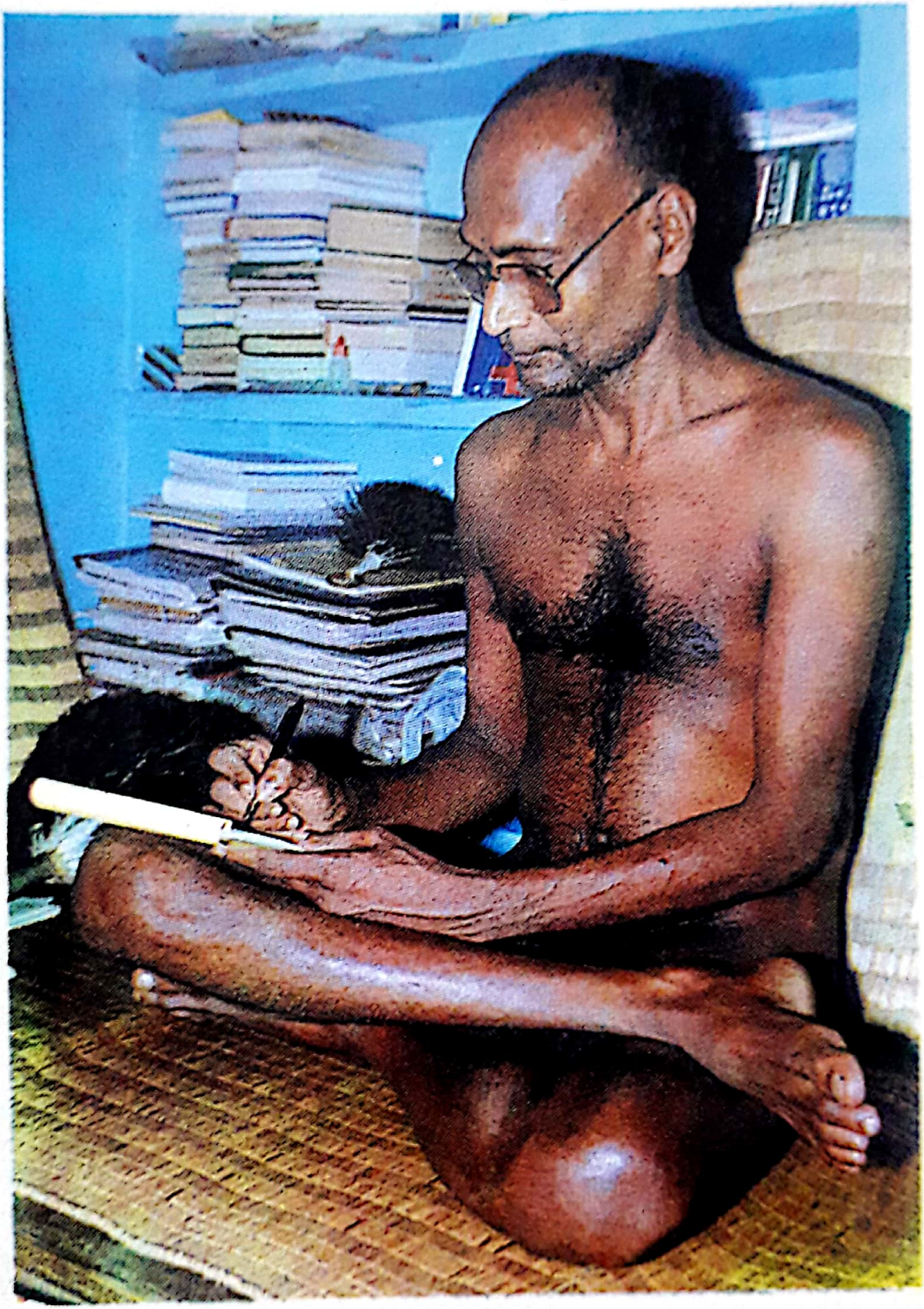

आ.रत्न कनकनंदीजी

Scanned by CamScanner

सत्यान्वेषी आ. कनकनन्दी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लेखक
मुनिश्री विद्यानन्दीजी

प्रकाशक
धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान

Scanned by CamScanner

सत्यान्वेषी आ. कनकनन्दी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संकलन - मुनि श्री विद्यानंदी जी

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान -

धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान

श्रीमती रत्नमाला जैन, ध.प. डॉ. राजमल जैन

4–5, आदर्श कोलोनी, पुला – उदयपुर

संस्करण - प्रथम

प्रतियाँ - 2000

मूल्य - 5.00 रू.

लेसर टाईप सेटर्स - श्री कुन्थुसागर ग्राफीक्स सेन्टर्स, 25, शिरोमणी बंगलोज, वरोड़ा एक्स. हाईवे के सामने, सी.टी.एम. के पास, अहमदाबाद–26.

फोन : 5892744

Scanned by CamScanner

संस्थान का संक्षिप्त परिचय

1. धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान का उदात्त उद्देश्य :–

अखिल विश्व के सर्वश्रेष्ठ महान् त्रिकाल अबाधित परम् सत्य को धार्मिक आस्था से दार्शनिक–तार्किक पद्धति द्वारा वैज्ञानिक परीक्षण–निरीक्षण प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में परिशीलन, परिज्ञान, परिपालन, साक्षात्कार, संदर्शन उपलब्धि करके स्वयं को समग्रता से परिपूर्ण परम् सत्य स्वरूप परिनिर्माण करना है। अतः इसका सर्वोपरी उद्देश्यः–

''संचवं भगवं'' सत्य ही परमेश्वर है ।

''सत्यं शिवं सुन्दरम्''

''सच्चिदानन्दम्''

''उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्''

Scanned by CamScanner

"Truth is God and God is truth."

व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र विश्व में उदारता पूर्ण सत्य वैज्ञानिक धर्म के माध्यम से प्रचार शीलता, प्रखरता समरसता सुख शान्ति का प्रचार–प्रसार करना है।

2. संस्थान के कार्यक्षेत्र :–

(१) आचार्य कनकनन्दी के साहित्य का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन करना तथा देश–विदेश में प्रचार प्रसार करना ।

(२) संगोष्ठी सम्बन्धी स्मारिका का प्रकाशन करना ।

(३) स्थानीय शिविर से लेकर जिला, प्रदेश–राष्ट्र स्तरीय धर्मदर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना ।

(४) राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक

Scanned by CamScanner

संगोष्ठियों का आयोजन करना ।

(५) विभिन्न क्षेत्र के योग्य व्यक्तियों को उपाधि पुरस्कारादि देकर सम्मानित करना ।

(६) इंटरनेट तथा टी.वी. के माध्यम से आचार्य श्री के साहित्य, उद्देश्य तथा प्रवचनों का प्रचार–प्रसार करना।

(७) पशु–पक्षी, पर्यावरण, असहाय–व्यक्ति, रोगी, गरीब, पीड़ित व्यक्ति आदि को सहायता पहुँचाना ।

(८) शोध कार्यो के लिए, संस्थान के कार्यों के लिए, साहित्य प्रकाशन सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक उपकरण यथा कम्प्यूटर, कम्प्यूटर लाइब्रेरी, इंटरनेट, ओवर हेड प्रोजेक्ट आदि क्रय करना ।

3. सर्वजन–सहयोग

Scanned by CamScanner

सत्य–उपासक, उदारमना, एवं परोपकारी महानुभावों! यह संस्थान **"सर्वजीव हिताय"** **"सर्वजीव सुखाय"** रूपी महान् लक्ष्य को आदर्श मानकर कार्यरत है। अतः यह संस्थान विश्व का विश्व के द्वारा, विश्व के लिए है। अतः अर्थ सहयोग, श्रम सहयोग, शिविर में सहभागी, संगोष्ठी में सहभागी, उपाधि एवं पुरस्कार प्राप्ति में देश–विदेश के जैन एवं अन्य धर्मावलम्बी सज्जन महानुभावों का भी सादर आमंत्रण, आह्वान, सुस्वागत है।

बन्धुवर !

आप एक विचारशील, स्वाध्याय प्रेमी और धर्मवत्सल बन्धु हैं। युवा पीढ़ी हेतु विशेष रूप से पूज्य आचार्य श्री कनकनन्दी जी द्वारा

Scanned by CamScanner

रचित तथा ''धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान'' और विभिन्न स्थानों से प्रकाशित ग्रन्थों के पठनोपरान्त आप निम्न प्रकार से हमें सहयोग दे सकते हैं। आपका सहयोग हमारे उद्देश्य और लक्ष्य का सम्बल है।

(१) पुस्तकों के विषय में अमूल्य, उपयोगी एवं निष्पक्ष सुझाव देकर ।

(२) अन्य स्वाध्याय प्रेमी बन्धुओं से पुस्तक के विषय में चर्चा करके।

(३) अपने इष्ट मित्रों एवं रिश्तेदारों को प्रकाशन की पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा देकर ।

(४) यथा शक्ति अप्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन में अपना सहयोग देकर।

(५) प्रकाशित पुस्तकें पर्व आदि पर

Scanned by CamScanner

वितरणार्थ मंगवाकर ।

4. संस्था की नियमावली :–

(१) विवक्षित पुस्तक के प्रकाशनार्थ द्रव्यदाता को उस किताब की दशमांश प्रतियाँ दी जायेंगी।

(२) ग्रंथ प्रकाशक (द्रव्यदाता) ग्रन्थमाला का आजीवन सदस्य रहेगा।तथा उन्हें ग्रंथमाला से प्रकाशित पुस्तक की एक–एक प्रति निःशुल्क दी जायेगी ।

(३) साधु, साध्वी, विशिष्ट विद्वज्जन और विशिष्ट धर्मायतनों को पुस्तक निःशुल्क दी जायेगी।

(४) ग्रंथमाला से सम्बन्धित कार्य–कर्त्ताओं को प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति

Scanned by CamScanner

निःशुल्क दी जायेगी ।

आपका आर्थिक सहयोग

(१) आजीवन सदस्यता 5000/– रू.
(२) संरक्षक 11000/– रू.
(३) परम संरक्षक 25000/– रू.
(४) शिरोमणि संरक्षक 51000/– रू.
(५) परम शिरोमणि
संरक्षक 1,00,000/रु.

आपका अन्य सहयोग :– संगोष्ठी, शिविर आदि में साहित्य, पुरस्कार आर्थिक सहायता, श्रमदान आदि देकर।

विशेष– संस्थान की प्रत्येक पुस्तक, स्मारिका में संस्थान के कार्यकर्त्ता, शिरोमणि और परम् शिरोमणि संरक्षक के नाम छपेंगे।

Scanned by CamScanner

जो जिस साहित्य या कार्य में अर्थ, श्रम, बौद्धिक सहायता करेगा उसमें उसका नाम प्रकाशित होगा और सम्मानित किया जायेगा।

आप से प्राप्त धन का सदुपयोग :–

ज्ञान दान, आजीवन सदस्यता आदि से प्राप्त धन, गुप्तदान, साहित्य–विक्रय से प्राप्त धन, संस्थान को प्राप्त पुरस्कार का धन साहित्य प्रकाशन आदि उपर्युक्त संस्थान के कार्य क्षेत्रों में संस्थान के वैज्ञानिक यंत्रादि क्रय में सदुपयोग किया जाता है।

Scanned by CamScanner

साधना सोपान के साधक :-
आचार्य श्री कनकनंदी
(व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

(1) **पूर्व नाम** – गंगाधर प्रधान

(2) **जन्म स्थल** – उत्कल (ब्रह्मपुरी)

(3) **माता–पिता** – श्रीमती रूक्मणि देवी, श्री मोहनचन्द प्रधान

(4) **लौकिक शिक्षा** – उच्च शिक्षा

(5) **क्षुल्लक दीक्षा** – अतिशय क्षेत्र पपौरा (टिकमगढ़) मध्यप्रदेश (सन्–1978)

(6) **मुनि दीक्षा** – 5 फरवरी 1981 श्रवणबेलगोला (कर्णाटक)

(7) **दीक्षा प्रदाता गुरू** – पूज्य गणधराचार्य

Scanned by CamScanner

श्री कुन्थुसागर जी

(8) **शिक्षा प्रदात्री प्रमुख गुरू–** पूज्या गणिनी विजयामति माताजी

(9) **उपाध्याय पद–** 25 नवम्बर 1982 हासन (कर्णाटक)

(10) **प्रशिक्षित सुयोग्य शिष्य समूह –** पू. आचार्य पद्मनन्दी, पू. आचार्य देवनन्दी, आचार्य कल्प पू. श्रुतनन्दी, पू. उपाध्याय कामकुमार नन्दी, आचार्य करूणानन्दी, पू. आ. कुशाग्रनन्दी, (श्रुतसागर) पू. उपाध्याय कनकोज्ज्वलनन्दी, पू. मुनि विद्यानन्दी, पू. मुनि गुप्तिनन्दी, पू. मुनि आज्ञासागरजी (इत्यादि शताधिक मुनि, आर्यिका वर्ग)

(11) **साहित्य, समीक्षा व सृजन –** विश्व

Scanned by CamScanner

विज्ञान रहस्य, अतिमानवीय शक्ति धर्म–दर्शन विज्ञान, लेश्या मनोविज्ञान, अनेकान्त दर्शन, स्वप्न विज्ञान, विश्व इतिहास, सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान शाश्वत समस्याओं का समाधान, अंग विज्ञान, आदर्श नागरिक की प्रायोगिक क्रिया, संगठन के सूत्र, ये कैसे धार्मिक राष्ट्र सेवी निर्व्यसनी? क्रांति के अग्रदूत, भारतीय आर्य कौन? व्यसन का धार्मिक वैज्ञानिक विश्लेषण, स्वतन्त्रता के सूत्र (मोक्ष शास्त्र) सत्य साम्य–सुखामृतम् (प्रवचनसार) विश्व द्रव्य विज्ञान (द्रव्य संग्रह) पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय, आध्यात्म मनो–विज्ञान (इष्टोपदेश)

(12) **विशेषांक / स्मारिका** – प्रथम राष्ट्रीय

Scanned by CamScanner

संगोष्ठी स्मारिका (जनवरी 1998) सत्य-गवेषणा (जनवरी 1999) शिक्षा शोधक (मार्च 2000)

(13) **मानव उपाधि** – सिद्धान्त चक्रवर्ती (समनेवाड़ी 1985) ऐलाचार्य (आरा-1998) विश्व धर्म प्रभाकर (दिल्ली 1990) ज्ञान-विज्ञान दिवाकर (रोहतक 1991) आचार्य (उदयपुर 1997)

(14) **उपाधि प्रदाता**–(आ. कुन्थुसागरजी. आ. देशभूषण. आ. अभिनन्दन सागरजी. चतुर्विध संघ एवं स्थानीय जन समूह

(14a) **प्रेरक वक्तव्य**– (1) Science is part of religion, But Religion is an absolute Science. विज्ञान

Scanned by CamScanner

आंशिक धर्म हैं, परन्तु धर्म पूर्ण विज्ञान है। (आ. कनकनन्दी गुरूदेव)

(2) You give me co-operation, I shall give you Scientific Religion. आप मुझे सहयोग दें, मैं आपको वैज्ञानिक धर्म दूँगा। (आचार्य कनकनन्दी गुरूदेव)

(1.4b) **तीखे प्रहार** – अधिकांश भारतीय भारत की महानता को न जानते हैं, न मानते हैं, न आचरण करते हैं परन्तु भारत की बुराइयों के लिए विदेशिओं को दोषी मानते हैं। हजारों वर्षों से भारत का जो पतन हो रहा हैं उसके लिए विदेशी कम दोषी है किन्तु भारतीय अधिक दोषी हैं। भारतीय लोग दूसरों की प्रगति से ईर्ष्या करते है बात अधिक काम कम करतेहैं।

Scanned by CamScanner

(14c) **बहु चर्चित कृति** – सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान, दंसण मूलो धम्मो तहा संसार मुल हेदुं मिच्छत्तं, जिनर्चना, स्वतन्त्रता के सूत्र, संस्कार आदि।

(15) **प्रमुख संगठन** – धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान।

(16) **प्रख्याति** – प्रखर प्रज्ञाधानी, कुशल संघ शासक, समीक्षात्मक साहित्य स्रजेता, सिद्धहस्त–व्याख्याता, मार्मिक प्रवचन एवं अनुशासन प्रिय, जैन–जैनेतर बच्चों, किशोर–किशोरियों, युवक–युवतियों के प्रशिक्षण दाता, बच्चे जिनको प्रिय तथा उनसे आहार लेने वाले, जैन–जैनेतर प्रबुद्ध वर्ग के लिए आदर्श ज्ञानी साधक। चन्दा–चिट्ठा तथा सामाजिक द्वन्द्व–

Scanned by CamScanner

फन्द से दूर, शान्त–समता निष्पृह–निराडम्बर के साधक।

(17) **सक्रिय गति विधियाँ –** साहित्य सृजन, श्रमण संघों का अध्यापन, प्रशिक्षण शिविर, राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी, इन्टरनेट माध्यम से धर्म–दर्शन विज्ञान का प्रचार–प्रसार, निस्वार्थ रूप से विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत जैन–अजैन समाज सेवकों/संस्थान/संगठनों को उपाधि प्रदान।

(18) **कीर्तिमान –** प्राचीन भारतीय दर्शन व साहित्य के आधार पर वैज्ञानिक तथ्यों की गुण– दोषात्मक समीक्षा–विश्लेषण।

(19) **साहित्य क्रांति –** अद्यावधि विभिन्न भाषाओं में अढ़ाई लाख प्रतियों का प्रकाशन। अनेक जैन–जैनेतर पत्र–पत्रिकाओं में शताधिक शोध–पूर्ण लेखों का प्रकाशन।

Scanned by CamScanner

(20) **दीक्षा का उद्देश्य** – सत्य की शोध, समत्व की सिद्धि, समाज को दिशा बोध, सुख की सर्वोपलब्धि धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक, राजनैतिक शैक्षणिक भ्रष्टाचार से विक्षुब्ध तथा उनके परिशोधन की भावना।

(21) **वर्षायोग** – शहगढ़ (मध्यप्रदेश) अकलुज (महाराष्ट्र) हासन, तुमकुर बेलगाँव, शमनेवाड़ी, शेड़वाल (कर्णाटक) अकलुज (महाराष्ट्र) आरा (बिहार) बड़ौत, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) रोहतक (हरियाणा) निवाई, लावा, बिजौलियाँ, कोटा, केशरियाजी, सागवाड़ा, सलूम्बर, झाड़ौल (राजस्थान)।

(22) **वाल्यकाल से भावित आजीवन व्रत**– 1. जीवनभर बालक (ब्रह्मचारी, सीधा–सरल–सहज) रहना 2. आजीवन विद्यार्थी (सतत्–अध्ययन,शोधरत रहना)

Scanned by CamScanner

(23) **विद्यार्थी जीवन में भावित उद्देश्य–** 1. सच्चा निस्वार्थी जनसेवक राष्ट्रीय या अन्तराष्ट्रीय नेता बनना या 2. वैज्ञानिक बनना या 3. सच्चा आदर्श आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, क्रान्तिकारी साधु बनना।

(24) **वर्तमान जीवन के लक्ष्य–** 1. सत्य की उपलब्धि, प्रचार–प्रसार, 2. समता की साधना एवं प्राप्ति तथा प्रचार–प्रसार, 3.असत्य, अन्याय, रूढ़ि, आड़म्बर, मिथ्या परम्परा, अन्धविश्वास, विषमता, पक्षपात, गूटबाजी, फूट भ्रष्टाचार, अनैतिक, अकर्मण्य, उच्छृंखल/अनुशासन–हीनता, शोषण का निर्मम परिशोधन।

(25) **प्रिय एवं श्रेय–** सत्य, समता, सुख, विज्ञान, गणित, दर्शन, तर्क, नवीन शोध, समीक्षा, बच्चे, स्कूल–कॉलेज में प्रवचन एवं

Scanned by CamScanner

प्रशिक्षण, ग्राम, प्राकृतिक वातावरण–आहार (दूध, घी, फल, हरी–सब्जी), विहार–विचार, भोले–भाले लोग, बच्चों से आहार लेना, उनसे काम करवाना, उनसे बोलना, स्वच्छता, पवित्रता, शुद्धता, पक्षपात रहित–सर्वजीव हितकारी, सुखकारी, धर्म–नीति, व्यवस्था, कानून, राजनीति, अर्थनीति, शोषण विहीन समाज, परोपकार, सेवा आदर, कोमल–निश्चल–निस्वार्थ–सहृदयता।

Scanned by CamScanner

जिनकी दृष्टि में सत्य एवं समता का फल है "सुख"

(वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

लेखक– मुनिश्री विद्यानंदी

दिगम्बर श्रमण परम्परा में अनेकों महान् गुण सम्पन्न मुनि मनीषी त्यागी–तपस्वी, ज्ञानी–ध्यानी साधक हैं। सबकी अपनी–अपनी विशेषतायें हैं, जिससे समाज राष्ट्र एवं गुणग्राही समूह लाभान्वित होता आ रहा है और होता रहेगा। वर्तमान में इसी श्रमण–परम्परा में पूज्य गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी के प्रमुख सुयोग्य शिष्य पूज्य अभीक्षण ज्ञानोपयोगी

Scanned by CamScanner

आचार्य श्री कनकनन्दी जी ने भी स्वात्म-साधना के साथ-साथ ही निरन्तर अपराजय अनेकों उपलब्धियों के बल पर उसी वरिष्ठ श्रमण पंक्ति में स्वयं को भी खड़ा करके यह सिद्ध कर दिया कि व्यक्ति दैवी-वरदान या विशिष्ट अनुग्रह की अपेक्षा नहीं करके, सतत् परिश्रम, कर्तव्य-निष्ठा, सत्य-जिज्ञासु एवं परस्पर सहकार से उस स्तर तक पहुँच सकता है, जिसकी अन्य लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। पुरातन विरासत में प्राप्त उपलब्धि से भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्वपुरूषार्थ से उपार्जित उपलब्धियाँ हैं। आप गतानुगतिक पारम्परिक उच्चशिक्षण प्राप्त करने पर भी उससे सन्तुष्ट नहीं हुये। ऐसी विद्या तो मात्र सुविधा-शुल्क

Scanned by CamScanner

प्रदान कर सकती हैं इससे अधिक इसका कुछ भी महत्त्व नहीं है। यही मानकर आपने किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा, परम्परा, लोक–मान्यता की, आत्मघाती संकीर्णताओ से ऊपर उठकर सत्य को सदैव अन्तः प्रेरणा से सर्वोपरी माना। तभी से आप एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व अर्जन करने में प्रयत्नशील रहे। स्वयं का असामान्य योग्यता का पूर्वाभास समय पूर्व ही करके उसे जनहितार्थ लगाने अपनी तुच्छ इच्छाओं को भी तिलाञ्जलि देने को संकल्प बन्द्ध हुए। आपने अपने कर्मक्षेत्र का चयन करने, हर कार्य क्षेत्र को बारीकी से देखा। लेकिन आपको कहीं स्वच्छ छवि वाले व्यक्तित्व का दर्शन नहीं हुआ। सर्वत्र स्वार्थ–संकीर्णता,

Scanned by CamScanner

कटुता लोकमूढ़ता (मूर्खता) ही नजर आयी। सिवाय मूर्खतापूर्ण धार्मिक क्रिया–काण्ड, छल–छदम् पूर्ण राजनीति, निहित स्वार्थपूर्ण सेवा परायणता, विनाशकारी भौतिक प्रगति एवं उच्छिष्ट सांसारिक भोग सामग्री का बोलबाला ही देखा। इसके खिलाफ आपके मन में विद्रोही विचारों की ज्वाला मुखरित हुई। इसे ही अपना कर्मक्षेत्र जीवन उद्देश्य मानकर आप घर से निकल पड़े और इसको अंजाम देने के लिए एक ऐसे सृजनशील गुरू की तलाश में लगे रहे। क्योंकि हर व्यक्ति गुरू के मार्गदर्शन में ही स्वयं का नव निर्माण करने में सफल सिद्ध हुआ है। आप अनेकों ख्यातनाम पद प्रतिष्ठित जनों के सम्पर्क में भी आये। लेकिन आपकी तर्कशील

Scanned by CamScanner

मेधा, प्रखर प्रज्ञा, पारदर्शी विवेक ने उन्हें गौरव पूर्ण गुरूत्व रूप में स्वीकारने में सहमती प्रकट नहीं की। अन्त में ''जिन खोजा तिन पाइया'' नीति के तहत आपको आचार्यरत्न महावीर कीर्ति एवं आचार्य रत्न विमल सागरजी महाराजश्री की प्रमुख शिष्या गणिनी आर्यिका पूज्या विजयमति माताजी का दर्शन हुआ। आपने उनसे जिज्ञासापूर्ण एक–एक शंकाओं का समाधान प्राप्त करके उनसे अध्ययन करने की इच्छा प्रकट की। माताजी की आगम निष्ठा, विवेचन–प्रणाली प्रश्न–सहिष्णुता, पारदर्शी व्याख्या शैली, गम्भीर–व्यक्तित्व एवं प्रयास आप जैसे योग्यतम् शिष्य को योग्यतम् गुरू बनने में प्रसंशनीय कारण बना। जिसे आप

Scanned by CamScanner

कृतज्ञभाव से समादर प्रदान करते हैं। सन् 1978 अतिशय तीर्थ क्षेत्र पपौरा (टिकमगढ़) में गणधराचार्य वात्सल्य मूर्ति कुन्थुसागरजी के कर कमलों से मुनि–कुमार (क्षुल्लक) दीक्षा ग्रहण की। तब भी आप का दृढ़–संकल्प, आत्म–विश्वास, अध्ययनशीलता, अनुभव अल्प आयु व सद्यदीक्षित होने के बावजूद अन्यों के लिए विस्मय का विषय था। आचार्य श्री कुन्थुसागरजी का वात्सल्य, स्नेह, सरलता, सहयोग की स्वतंत्रता, स्वच्छ वातावरण में आपकी उन्नति वृद्धिंगत होती रही, बल्कि आप जैसे होनहार शिष्य पर उन्हें गर्व भी था। गुरू के इसी उन्मुक्त सहयोग से आपने अपना भरपूर विकास किया। परिणाम स्वरूप माघ

Scanned by CamScanner

शुक्ला शुक्रवार दिनांक 5-2-1981 में भगवान बाहुबली के सहस्त्राब्दि महा मस्तकाभिषेक की अविस्मरणीय समारोह सभा में दिगम्बर श्रमण परम्परा के 150 शीर्षस्थ आचार्यों, भट्टारकों, मुनियों, साध्वियों, विद्वानों, नेताओं के सानिध्य एवं हजारों जन समूह के बीच निग्रन्थ श्रमण महाव्रत की दीक्षा विधिवत स्वीकार की। ''मौनात मुनि'' इस वेद वाक्य के अनुरूप आपने अपनी शक्ति, समय, श्रम, बुद्धि को साधने में मौन की विशेष साधना आरम्भ की तथा अपनी मातृभाषा उड़िया, बंगला भाषा के अतिरिक्त प्राचीन भारत की प्राकृत, संस्कृत, अप्रभ्रंस, कन्नड, मराठी, गुजराती भाषाओं के साथ ही अंग्रजी एवं हिन्दी

Scanned by CamScanner

आदि प्रमुख भाषाओं के ऊपर अधिकार प्राप्त किया। इसके साथ ही आपनें जैन, बौद्ध, हिन्दू, इस्लाम, पाश्चात्य आदि धर्म–दर्शनों का भी गहन विषद् अध्ययन किया। आपकी इस विद्वता को देखते हुए आचार्यश्री गुरूदेव कुन्थुसागरजी ने आषाढ़ शुक्ला दसमी बुधवार दिनांक 25/11/1982 हासन (कर्नाटक) में अपने ससंघ एवं विशाल धर्म–सभा में आपको उपाध्याय पद पर प्रस्थापित किया। तभी से आप अपने ज्ञान को अन्य साधुओं, साध्वियों को प्रदान करने में संलग्न रहे। आपके कुशल अध्यव्यसाय/अध्यापन से आज भी अनेकों मुनि आर्यिका, आचार्य तथा बुद्धि–जीवी वर्ग विद्वत्ता अर्जन करने में गर्व अनुभव

Scanned by CamScanner

करते हैं। आज इस भीड़ भरी दुनियाँ में ज्ञानवानों के जितनी विरलता हैं उससे भी सहस्त्र गुण। उसके वितरण करने वालों की दुर्लभता है। उससे भी करोडों गुणा उस पर अमल करनेवालों की विरलता है। आपकी अध्यापन–प्रणाली, समय–बद्धता, कठोर अनुशासन, वैज्ञानिक अनुसंधान, अकाट्य–विश्लेषण क्षमता, निष्पक्ष–समीक्षा, शोधपूर्ण–गवेषणा, प्रौढ भाव–पूर्ण–भाषा के साथ अनवरत परिश्रम, दार्शनिक मुद्रा के निकटस्थ समर्पित शिष्य निश्चित ही आप जैसे गुरु की सत्संगति से स्वयं को भी श्रेष्ठतम बनाने में सफल हो सकते हैं। लेकिन आपकी दृष्टि में ऐसे शिष्यों में पूर्व पुण्य होना ही पर्याप्त नहीं

Scanned by CamScanner

है बल्कि सुशिष्य में योग्य अनेकानेक गुणों का होना भी अनिवार्य हैं। आप अपने शिष्यों में सदैव अपने जैसे गुणों को गढ़ने का प्रयास करते रहे हैं।समय–समय पर विभिन्न अवसरों पर आपको गौरवपूर्ण उपाधियों से सम्मानित किया गया है। सन् 1985 समनेवाड़ी (कर्नाटक) चार्तुमास के अन्तर्गत आपने विशाल चतुर्विध संघ को महाप्राज्ञ आचार्य वीरसेन की महाभास्य टीका धवल सिद्धान्त ग्रन्थ की वाँचना कराई। तब आपकी वाङ्मयता पर कायल होकर आचार्य रत्न देशभूषण महाराजश्री, आचार्य श्री कुनथुसागर जी के संयुक्त तत्वावधान में त्रेलोक्य महामण्डल विधान की प्रभावना पूर्ण पूर्णाहुति के अवसर

Scanned by CamScanner

पर विशाल जन समुदाय के बीच चतुर्विद संघ ने आपको **सिद्धान्त–चक्रवर्ती** पद से विभूषित किया। आपने अपने प्रभावी आगम विवेचनों से सदैव अपने गुरू की ख्याति का विस्तार ही किया है। गुरू के नाम पर, शिष्य के नाम होने में आप कतई विश्वास नही रखते, बल्कि इसे शिष्य की कमजोरी मानते हैं। आपने कभी अपनी गुरू परम्परा की श्रेष्ठता से स्वयं की श्रेष्ठता का दावा नहीं किया। अपनी श्रेष्ठता अपने ही योग्यतम पौरूष से अर्जन करने में आप विश्वास करते रहे हैं। आपने कभी सिद्धान्तों के साथ न समझौता किया न कभी सौदा ही किया। यह आपकी चर्चा एवं प्रवचनों से स्पष्ट होता है।

Scanned by CamScanner

विशाल चतुर्विद संघ (प्रायः 50 साधु-साध्वी) की व्यवस्था को श्रमण संहिता के अनुरूप करने में आपने कोई कोर कसर नहीं रखी। आगम मर्यादाओं पर आस्था रखते हुए भी समयानुसार उन पुरातन तथ्यों के मर्म स्थलों को आँख मूंद कर कभी स्वीकार भी नहीं किया है। आपकी कुशल नेतृत्व क्षमता को देखते हुए सन् 1988 आरा (विहार) चतुर्मास के समापन समारोह में आपको आपके दीक्षा गुरू ने **'ऐलाचार्य'** पद पर प्रतिष्ठित किया। संघ संचालनआपकी विशेषताओं में शीर्षस्थ है। आपने पुरस्कार और प्रायश्चित्त से हर किसी के हौंसले को बुलन्द किया है। आपने सदैव योग्यता की परख की है। आपकी

Scanned by CamScanner

दृष्टि में व्यक्तिवाद सदैव विनाश का पर्याय रहा है। यही कारण है आप किसी के नाम का नहीं, उनके काम का मूल्यांकन करते रहे हैं। आपके जो शिष्य आपके मार्ग दर्शन अनुग्रह–निग्रह से परिपक्व हो गये, वे जनता जनार्दन की आंखों की पलकों पर अपना स्थान जमा सके। सन् 1990 देश की राजधानी दिल्ली में यमुना विहार पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर दिल्ली में जैन समाज ने आपका **"विश्व धर्म प्रभाकर"** पद से विभूषित किया। सन् 1991 रोहतक (हरियाणा) वर्षायोग समापन समारोह में सकल दिगम्बर जैन समाज ने **"ज्ञान विज्ञान दिवाकर"** उपाधि से अलंकृत किया। इन पद एवं प्रतिष्ठाओं से

Scanned by CamScanner

निर्लिप्त रहते हुए अपने दायित्वों को तहेदिल से निभाने में आपने सदैव अपना सम्मान, स्वाभिमान अनुभव किया है।

जैन धर्म दर्शन की उपयोगिता, प्रासंगिकता, वरीयता सदैव देश–विदेश में चर्चित रही है। इसमें प्रतिपादित अनेकान्त, स्याद्वाद, समाजवाद, मनोविज्ञान, रासायनिक–विज्ञान, भौतिक–विज्ञान, जैविक–विज्ञान, शिक्षा–विज्ञान, कर्म–विज्ञान आयुर्विज्ञान, सकुन–विज्ञान, स्वप्न–विज्ञान, आध्यात्म–विज्ञान एवं गणित–विज्ञान जैसे गहन विषयों के अध्ययन से प्राचीन भारतीय दर्शनशास्त्र पर जहाँ आप गौरव अनुभव करते हैं, वहीं वर्तमान में इस शीर्षस्थ भारतीय दर्शन की उपेक्षा पर आप

Scanned by CamScanner

खेद–खिन्न भी हैं। जैन धर्म में वर्णित उच्च स्तरीय सिद्धान्तों को कोई चुनौती नहीं दे सकते। इसके बावजूद आपकी मान्यता है कि वर्तमान में इन सिद्धान्तों के अनुयायी ही धन–लोलुपता, संकीर्ण मनोवृत्ति, स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण, परस्पर–अहंकार की तुष्टि एवं आपसी विघटन से अपने ही आस्था केन्द्रों को प्रदूषित किया जा रहे हैं। सभी धर्म मजहबों का यह दुर्भाग्य है कि इसमें आस्था रखने वाले अनुयायी स्वयं के मान्य सिद्धान्तों के एकमेव स्वयं आस्तिक एवं आदर्श मानकर चल रहे हैं। लेकिन हकीकत है कि इन आस्थाओं के स्वयंभू समूहों ने खुद के आचरण से अपने ही सिद्धान्तों की आबरू लूटने व हत्या करने

Scanned by CamScanner

पर उतारू हो रहे हैं। अर्थात् दुनिया के हर धर्म के अधिकांश पूर्वाग्रही, दूराग्रहियों ने धर्म का दुरूपयोग किया है। परिणामतः धर्म के नाम पर सहस्त्रों वर्षों से पंथ परम्परा मत-मान्यताओं की आड़ में धरती रक्त रंजित होती रही है और हो रही हैं। जिसका साक्षी भारत का मध्यकालीन इतिहास है। अतः सर्वप्रथम धर्म को विश्वधर्म रूप में परिलक्षित करने की आवश्यकता है। लेकिन क्या अपरिभाषित, अनैतिक, अवैज्ञानिक, अविवेकपूर्ण धर्माभासों को नकारना एवं विवेकपूर्ण विकासशील वैज्ञानिक सनातन सत्य को प्रतिष्ठित करना इतना आसान है? निश्चित ही यह सामूहिक दृष्टि से सर्वथा

Scanned by CamScanner

असम्भव है। किन्तु व्यक्तित्व रूप से त्रैकालिक ध्रुव धर्म साम्राज्य की स्थापना सम्भव भी है। इसी आत्मविश्वास के बल पर आपने ''धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान'' की स्थापना सन् 1989 में बड़ौत में (उत्तर–प्रदेश) की। इस संस्था के तहत प्राचीन आर्ष ग्रन्थों की समीक्षा पूर्ण व्याख्या करके 10 वर्षों में शताधिक ग्रन्थों प्रकाशन करने का नया कीर्तिमान स्थापित किया। इसी संस्था के बहुमुखी विकास उद्देश्य उन्नति के लिए ''धर्म दर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर'' का अनेकों बार राज्य स्तरीय आयोजन किया। बच्चों में संस्कार, युवाओं में सदाचार, प्रौढ़ों में संगठन एवं वृद्धों की सुसमाधि के आधार पर भारत

Scanned by CamScanner

में सर्वोदय तीर्थ प्रवर्तन करने की एक मिसाल स्थापित की। जिससे 10 वर्षों की अल्पावधि में ही हजारों लोगों ने एक नई जीवन–प्रणाली अर्जन की।

आप जैन श्रमण परम्परा के आत्म साधक होने बावजूद देश–विदेश के ख्यातनाम दार्शनिक, वैज्ञानिक चिन्तक, साहित्यकार, शिक्षाविद्, बुद्धिजीविओंके विचारों के अध्येता हैं। आप एक साधु ही नहीं परन्तु दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजसुधारक, राजनीतिज्ञ एवं विश्वधर्म प्रणेता भी हैं। विरोधी धर्म में रहने वाले अविरोधी गुणों को स्वीकार करना आपकी सबसे बडी विशेषता है। आपकी बहुमुखी प्रतिभा के पीछे यही प्रेरक कारण बना

Scanned by CamScanner

है। सत्यनिष्ठा, उदारता, गुणग्राहकता, जिज्ञासु–प्रवृत्ति जैसे गुणों ने आपके व्यक्तित्व के परिष्कार में अहम् भूमिका निभाई है। जिससे आप साम्प्रदायिक संकीर्णता, धार्मिक विकृति, सामाजितक–असहिष्णुता, वैज्ञानिक विभिषिका आध्यात्मिक–उत्श्रृंखलता, सांस्कृति–विस्मृति, बौद्धिक शुष्कता, संघीय–शिथिलता एवं नैतिक–पतन से उत्पन्न त्रासदी से मानव समाज को बचाने में प्रयत्नशील हैं। अद्यावधि इस क्षेत्र में प्राप्त आपकी उपलब्धियों से हर समाज वर्ग के लाखों संवेदनशील श्रद्धालु तथा बुद्धिजीवी परिचित हैं। अल्पावधि में ही आपकी ''साहित्य क्रान्ति'' की बुद्धिजीवी चेतनशील, गम्भीर, जागृत आत्माओं ने

Scanned by CamScanner

सराहना की, साथ ही ख्यातनाम वैज्ञानिक, प्रोफेसर्स, इंजिनियर, डॉक्टर, वकील, पत्रकार. विद्वत वर्ग एवं श्रीमानों ने आपकी सराहना ही नहीं की अपितु सहयोग भी प्रदान किया। हर अच्छे या बुरे कार्य का आरम्भ समय, सहयोग के अनुसार आगे बढ़ता है। जहाँ सृजनशील कार्य का अन्त विकास की मंजिल पर जाकर आध्यात्मिक रूप में खत्म होता है वहीं विध्वंसात्मक कार्य विनाश के कगार पर लाकर खड़ा करता है। यह व्यक्ति पर निर्भर है कि उसे अपनी शक्ति, विद्या, यश, बल, समय एवं सहयोग को किस दिशा में प्रयुक्त करना है। हर वृक्ष अपने पीछे अपनी सजाति वंशानुगामी बीजों को अपना गुण, कर्म,

Scanned by CamScanner

स्वभाव, प्रकृति सौंपकर अंत में विलीन हो जाता है ताकि अतीत अनंत काल की तरह ही अनागत अनन्त काल भी प्रकृति की सुन्दरता, सुमधुरता का अवलोकन–अवगमन कर सके। इसी तरह अपनी दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित गुण सम्पदाओं को दिव्य पद प्रतिष्ठाओं को, नित्य नूतन चिर सनातन रखने हर प्राचीन ऋषि, मुनि, मनीषियों ने अपनी आध्यात्मिक विभूतियों के साथ अपनी पद एवं प्रतिष्ठा साधना एवं सम्मान अपने उत्तरवर्ती गुण सम्पन्न सुशिष्य को प्रदान किए हैं। इसी आर्ष मार्ग का अनुशरण करते हुए गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज श्री ने आपके ऊपर अपनी संघीय

Scanned by CamScanner

संहिता का कार्यभार सौंपते हुए वैशाख शुक्ला सप्तमी ''गुरू पुण्यामृत योग' दिनांक 24/4/1997 को राजस्थान की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक नगरी उदयपुर में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कराया। आचार्य श्री की हार्दिकआज्ञा से आचार्य अभिनंदन सागरजी, आचार्य पद्मनंदीजी के विशाल चतुर्विध संघ तथा राजस्थान एवं गुजरात के अनेकों अंचलों से पधारे प्रतिष्ठित गणमान्य लोगों एवं हजारों श्रद्धालु जनों के बीच आपने इस संघीय भार का उत्तरदायित्व स्वीकारते हुए इस आचार्य पद से आप स्वयं ही गौरवान्वित नहीं हुए, बल्कि पूरे श्रमण संघ को गौरावान्वित किया।

एक संत हजारों साहित्यों को अपने ज्ञानकोश

Scanned by CamScanner

में समाहित करता है। तथा एक साहित्य सहस्त्रों संतों के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। इसी मार्मिक नीति के अनुसार आप अपने आप में संत के साथ साहित्य का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। आपके जीवन उद्देश्य हैं कि "You give me cooperation I shall give you Scientific religion."

"आप मुझे सहकार दो, मैं तुम्हें वैज्ञानिक धर्म दूँगा" उसी उद्घोष को मूर्त रूप देने में आपके पीछे देश के शताधिक शीर्षस्थ विचारक, वैज्ञानिक संकल्पबद्ध हैं। आपने कभी अपने विचारों को अपने उद्देश्यों को कागजी योजनाओं तक ही सीमित नहीं किया, बल्कि उसे कर्म

Scanned by CamScanner

क्षेत्र में उतारा है। आपने कभी भूमी, भवन–निर्माण, में विश्वास नहीं किया, न हीं कभी धन–संग्रह, जन–आड़म्बरों से दूसरो को प्रभावित करने का दुसाहस ही किया। क्योंकि कर्त्तव्य विहीन होकर किसी भी प्रकार से श्रेय हासिल करना पाप ही नहीं राष्ट्रीय अपराध भी है। आपका विश्वास ''पदाधिकारी बनने में नहीं अपितु कार्याधिकारी बनने में है। क्योंकि अधिकार से कर्तव्य श्रेष्ठ है। वर्तमान में परिवार, समाज, संस्था, राजनीति, कार्यालय जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं में जिस तेजी से स्वकर्तव्यों की उपेक्षा व पद लिप्सा की तेजी दिखाई देती है; यह निश्चित ही आने वाली सदी के लिए अशुभ संकेत है। पद, पैसा एवं

Scanned by CamScanner

प्रतिष्ठा के लिए जब अस्वस्थ प्रतियोगिता होती है, तब निश्चित ही धर्म–समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति ईर्ष्या, वैमनस्य, विघटन, दोषारोपण जैसी विनाशकारी तत्त्वों से प्रभावित होती है। इसलिए भगवान महावीर के सिद्धान्तों– अनेकान्त, सहिष्णुता, उदारता, अहिंसा, अपरिग्रह अचौर्य, अकाम, अस्तेय जैसे मूल्यों की स्थापना किसी समाज धर्म, राष्ट्र ही नहीं, सम्पूर्ण विश्वके हित को देखते हुए विश्व धर्म के रूप में पुनःस्थापित करने की आवश्यकता है। इसी दिशा में पूज्य आचार्य कनकनंदी जी प्रयासरत हैं।

आपने प्राचीन ग्रन्थों को आधुनिक शिक्षा–विज्ञान के अनुरूप देश–विदेश में प्रचार–

Scanned by CamScanner

प्रसार करने, राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया। भण्डार ग्रन्थों में लिपिबद्ध प्राचीन सिद्धान्तों को शैक्षणिक–विधाओं में अनुसंधानरत् सत्यशोधकों के चिन्तन का विषय बनाया। अद्यावधि जैन ग्रन्थों पर शोध कार्यरत अनेकों बुद्धिर्जीवी प्रबुद्ध वर्ग शताधिक शोधपूर्ण विषयों को प्रस्तुत करके, जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है सत्य तत्त्वों पर आधारित हैं, जैन समूह ही नहीं, जीव समूह के हित में है, यह साबित किया। अभी तक जो अनुसंधानात्मक शोधकार्य हुए हैं, यह निश्चित ही जैन साहित्य जगत में अपूर्व उपलब्धि हैं। हाल के तथ्यों से यह स्पष्ट हुआ है कि इसी तरह यदि प्राचीन

Scanned by CamScanner

भारतीय ग्रन्थों पर शोधकार्य होते रहे तो जैन धर्म, विश्व धर्म होने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती है, बशर्ते शोधार्थी को पूर्वाग्रह का विसर्जन एवं सत्याग्रह का उपार्जन करना अनिवार्य होगा। साथ ही ऐसे प्रतिभा क धनियों को समाज से हर संभव सहयोग की अपेक्षा होगी। हमारे देश में अन्य देशों के मुकाबले प्रतिभाशालियों की कमी नहीं हैं। लेकिन ऐसे प्रतिभालियों के लिए उचित साधन–सामग्री एवं सम्मान की कमी होने से हमारे देश की प्रतिभाएँ पश्चिम की ओर पलायन कर रही हैं। जिससे हमारी उन्नति में गतिशीलता नहीं है। हमारी आपसी फूट, अहंमान्यता, असहिष्णुता, ईष्यालु–प्रवृत्ति ने

Scanned by CamScanner

हमारे पतन में अहम् भूमिका निभाई है। पूज्य आचार्यश्री ने अपनी साधना के इस लम्बे अर्से में देश की इस मानसिक कमजोरी का अनुभव करके देश के विकासोन्मुखी विभिन्न विधाओं में निस्वार्थ सक्रीय सेवा प्रदान करने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए "धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान" की ओर से राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करने का सुभारम्भ किया है। ताकि ऐसे योग्यतम समाज सेवकों, राष्ट्र सेवकों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों का होंसला बुलन्द हो सके। आचार्य श्री के बहुमुखी उद्देश्यों को गति प्रदान करने में "धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध–संस्थान" गुरूदेव की शोधपूर्ण समीक्षात्मक कृतियों को विभिन्न भाषाओं में

Scanned by CamScanner

प्रकाशित करने हेतु विगत 10 वर्षो से कार्यरत हैं। जिसने अनेकों भाषाओं में कई हजार प्रतियाँ जनता तक पहुँचाने का श्रेय प्राप्त किया है। आगामी योजनाओं के तहत आचार्य श्री कनकनंदी जी के साहित्य, विचारों–प्रवचनों का देश–विदेश में प्रचार–प्रसार करने डॉ. राजमल जैन(उदयपुर) वरिष्ठ वैज्ञानिक सौर वेधशाला, धर्म–दर्शन–विज्ञान–शोध–संस्थान के मानद निर्देशक, अपनी संस्था के सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से इन्टरनेट, टी.वी.के माध्यम से जैन दर्शन के साथ ही प्राचीन भारत की सभ्यता, संस्कृति को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं।साथ ही संकीर्ण राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर

Scanned by CamScanner

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की सर्वव्यापी समत्ववाद (साम्यवाद) की भावना से सम्पूर्ण भूमण्डल, विश्व एकीकरण की भावना से राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ–साथ अन्तरर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों की भी रूप रेखा तैयार की जा रही है ताकि विश्व मंच तक भगवान महावीर के संदेश पहुँच सकें। जैन समाज आर्थिक दृष्टि से जितना समर्थ है धर्म के नाम पर प्रतिवर्ष करोड़ों की सम्पत्ति व्यय करता है. लेकिन क्या इस सम्पत्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यों में हो रहा है? इस पर समाज को गम्भीरता से सोचने की जरूरत है। जैन दर्शन जितना महान् हैं उसके अनुपात में क्या उसके अनुयायी महान् है? जैन समाज के सामने

Scanned by CamScanner

यह अहं प्रश्न है? कहीं हमारे चरित्र एवं चिन्तन से हम अपनी ही गौरवशाली प्राचीन संस्कृति के गिरावट में कारण तो नहीं बन रहे हैं? कहीं हम हमारे सिद्धान्तों में प्रतिपादित अनेकान्तवाद, सापेक्षवाद, अहिंसा एवं अपरिग्रह जैसे शाश्वत मूल्यों के विद्रोही तो नहीं बने हैं। ऐसे कुछ सवाल आज पूरे जैन समूह के सामने खड़े हैं? इन्हीं सब प्रश्नों के हल के साथ, सोये हुए भारतीयों को जगाने के लिए आचार्यश्री कनकनंदीजी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" के लिए कार्यरत हैं। जिसके पीछेन अपनी कोई महत्वकांक्षा हैं न कहीं आत्म ख्याति की लिप्सा है। सिर्फ एक अन्तःकरण

Scanned by CamScanner

में सत्य के प्रति आन्तरिक–निष्ठा है। उस सत्य की विश्व भर में प्राण–प्रतिष्ठा करने की प्रबल भावना है। जिस भावना से प्रेरित होकर उस सत्य की उपासना में संलग्न है। जिसके खातिर समता की साधना में संलग्न हैं।

मुझे विश्वास है समता की साधना में आप सत्य की सिद्धि करके सुख को प्राप्त करेंगे। मेरा यह सौभाग्य है कि 30 मार्च 1986 में गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी महाराज श्री के करकमलों से श्रमण दीक्षा प्राप्त हुई। तभीसे आपके सानिध्य में ज्ञानार्जन करने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरा यह विश्वास है कि मेरे जैसे जिज्ञासु

Scanned by CamScanner

ज्ञानेच्छुक अपने में सुप्त प्रतिभा को उजागर करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। मैंने विगत 14 वर्षो में गुरूदेव को जिस रूप में देखा उनके आन्तरिक व्यक्तित्व को शब्द शिल्पी बनकर मूर्त रूप में देने का प्रयास किया। हालांकि हर व्यक्ति के रूप अनेक रूप होने पर भी उनकी विभिन्नताएँ, मनःस्थिति, परिस्थिति एवं वस्तुस्थिति के अनुरूप समुच्चय व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। अद्यावधि मैं आपके इन्हीं आचरित अनुभवों से चिन्तित–चर्चाओं से एवं विचारित व्याख्याओं से स्वयं की योग्यतानुसार लाभान्वित होने का पूर्ण मनोबल के साथ प्रयासरत हूँ। मैं आशा करता हूँ आप जैसे साधु–संतों का सानिध्य हर किसी

Scanned by CamScanner

के लिए सुलभ हो, जिससे स्वात्म सुख के साथ समाज राष्ट्र संस्कृति के नवनिर्माण में अपना योगदान प्रदान कर सके। अन्त में मैं पूज्य गुरूदेव के उद्देश्यों के पूर्ति की शुभकामनाएँ करता हुआ–

मुनिश्री विद्यानंदी

संघस्थ– आचार्य श्री कनकनंदीजी

14–1–2000 मकर संक्रांति

चावण्ड(राणाप्रताप की अंतिम राजधानी) उदयपुर (राज.)

Scanned by CamScanner

ज्ञान-विज्ञान का आविष्कारक : भारत

जिस प्रकार वृक्ष के लिए बीज उसी प्रकार भूतकालीन सभ्यता, संस्कृति हर राष्ट्र या समाज के लिए जरुरत है क्योंकि उन घटनाओ एंव परम्पराओं से शिक्षा लेकर के हम आगे बढ सकते हैं। केवल इतिहास पढ़ लेना यह तो केवल सड़े गले शव को उखाड़ना है। इतिहास उसे कहते हैं जिसमें महापुरुष के बारे में वर्णन किया गया हो, जिससे हमें प्रेरणा मिले। एक मराठी कवि ने कहा–

''महापुरुष होउन गेले त्यांचे चारित्र पहाजरा।
आपण त्यांचे समान ह्वावे यांचे सापड़े बोध खरा॥''

Scanned by CamScanner

हम इतिहास, पुराण आदि पढ़ते हैं, वह क्या मनोरंजन, गुणगान या समय व्यतीत करने के लिए है ? नहीं ! बल्कि जो महापुरुष हो गए हैं उनका चारित्र अध्ययन करने के लिए, उसको पढ़कर उनके आदर्शो को जीवन में अपना करके, उनके समान बनकर राष्ट्र को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने के लिए।

हमारा भारत कभी विश्व गुरु था क्योंकि हमारे भारत में आधुनिक विज्ञान की हर शाखायें थी। ऐसा कहा गया है कि–

"कला बहत्तर नरन की, यामें दो सरदार,
एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार।"

बहत्तर कलाएँ होती हैं। उन बहत्तर कलाओं में दो कलाएँ सर्वश्रेष्ठ कलायें है, एक कला

Scanned by CamScanner

है– जीव की जीविका "शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम्।" जीव को जीविका के अन्तर्गत वाणिज्य, शिल्प, कला, व्याकरण, इतिहास, पुराण आते हैं। दूसरी कला है– जीव उद्धार! इन बहत्तर कलाओं में समस्त आध्यात्मिक विद्यायें पराविद्यायें हमारे भारत में किस प्रकार थीं उन सभी के बारे में मैं यहाँ संक्षिप्त में प्रकाश डालूँगा। सर्वप्रथम मैं यह बताना चाहूँगा जिस प्रकार सम्पूर्ण सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्माण्ड आकाश में गर्भित हैं उसी प्रकार सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान का उदय विकास केवली–तीर्थंकर से हुआ है। इसलिए सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान के सम्पादक, आविष्कारक प्रवक्ता केवली भगवान हैं।

Scanned by CamScanner

"यः सर्वाणि चराचराणि विधि–वद् द्रव्याणि तेषां गुणान्,

पर्यायानपि भूत–भावि भावितः सर्वान् सदा सर्वदा।

जानीते युगपत्–प्रतिक्षण मतः सर्वज्ञ इत्युच्यते।

सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीरायतस्मै नमः॥

Einstain Says, "'We can only know the relactive truth the real truth is know only to the universal observer."

हम सब केवल आंशिक सत्य को जान सकते हैं। कोई भी महान् वैज्ञानिक दार्शनिक

Scanned by CamScanner

ही क्यों न हों सम्पूर्ण सत्य को नहीं जान सकते हैं क्योंकि हमारे पास जो ज्ञान हैं वो निश्चित हैं। जिस प्रकार हमारे पास अनन्त आकाश होते हुए भी हम अनन्त आकाश को नहीं देख सकते हैं क्योंकि हमारी दृष्टि शक्ति सीमित हैं। तीर्थंकर एकसाथ कितनी भाषाएँ बोलते हैं ? (718 भाषाएँ बोलते हैं।) इसलिए समस्त ज्ञान–विज्ञान के जन्मदाता तीर्थंकर हैं। उसके बाद सम्पादन करते हैं गणधर। समस्त कलाओं विद्याओं का सम्पादन आदिनाथ भगवान ने किया था। परन्तु उसको प्रायोगिक रूप में संक्षिप्त वर्णन मैं करुंगा। भारतीय संस्कृति में 6075 ईसा पूर्व एक धन्वन्तरी हुए हैं जो कि शल्य चिकित्सा और रसायन

Scanned by CamScanner

शास्त्र के प्रवक्ता थे। उसी प्रकार अश्विनी कुमार थे जो औषध आयुर्वेद के माध्यम से चिर यौवन रहे और एक च्यवन ऋषि थे। वो वृद्ध थे। इसलिए च्यवन ऋषि को उन्होंने औषधि दी जिसके माध्यम से वृद्ध ऋषि युवक बन गये और औषधि का नाम च्यवनप्राश पड़ गया। ये सभी हमारे प्राचीन ग्रन्थ चरक संहिता, आयुर्वेद इन सभी में उनका वर्णन है। इसके बाद पुनर्वसु आत्रय हुए। वे ईसा पूर्व 2800 वर्ष पूर्व हुये। यह सभी शिक्षा पद्धति आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा का वर्णन प्रतिपादन उनके शिष्यों के लिए किया। हिपोक्रिटिश यूनानी थे। इनको इतिहासकार मानते है कि हिपोक्रिटिश आयुर्वेदिक के शल्य

Scanned by CamScanner

चिकित्सा के आविष्कारक हैं। परन्तु उससे भी कई हजार वर्ष पहले लिखित रूप में, प्रयोग रूप में हमारे देश में शल्य चिकित्सा से लेकर के अन्य प्रकार की चिकित्सा व शिक्षा थी। इस शल्य चिकित्सा का आविष्कार भी मूल ग्रन्थ चरक संहिता, बाग्भट्ट संहिता, योग रत्नाकर आदि में भी इनका वर्णन मिलता है। ये शल्य चिकित्सा के आद्य प्रवक्ता थे। लिखित रूप में उन्होंने ग्रन्थ लिखा सुश्रुत संहिता। ईसा पूर्व 600 वर्ष पहले भारत, ग्रीक आदि कुछ देशों को छोड़कर अन्य देश अनंत अंधकार में थे। उन्हें अंक व अक्षर का ज्ञान नहीं था और हमारे यहाँ सभी था। इन सभी के साक्षी शिलालेख और ग्रंथ हैं। सुश्रुत नाक, कान,

Scanned by CamScanner

गला, आँख इन सभी की शल्य चिकित्सा करते थे। एक स्थान से मांस काटकर के अन्य स्थान में जोड़ देते थे। उन्होंने शल्य चिकित्सा के 120 प्रकार के यंत्रों का आविष्कार किया था। जीवक बुद्ध के चिकित्सक थे। एक सेठ की लड़की थी । जिसकी उल्टी के माध्यम से अन्दर की जो आतें बाहर निकल गयीं, और जीवक ने (Operation) करके पुनः उसको स्थापित कर दिया। हमारे भारत में पशु–पक्षी की सुरक्षा और चिकित्सा पद्धति का भी आविष्कार हुआ था।

आदिनाथ भगवान की दो पुत्रियाँ थीं– ब्राह्मी और सुन्दरी। भरत–बाहुबली को उन्होंने पहले विद्यादान न देकर ब्राह्मी और

Scanned by CamScanner

सुन्दरी को दिया। क्योंकि विद्यादान के पहले आदिनाथ भगवान कहते हैं–

"विद्यावान् पुरूषो लोके सम्मति याति कोविदैः।

नारी च तद्वती धत्ते स्त्री सृष्टेरग्रिमंपदम्॥"

जिस प्रकार विद्यावान् पुरुष समाज में अग्रिम पद प्राप्त करते हैं उसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करके स्त्री समाज में अग्रिम, स्थान प्राप्त करती है।

इसलिए स्त्री–शिक्षा का पहले आदिनाथ भगवान ने प्रारम्भ किया क्योंकि माता प्रथम गुरु होती है। इसलिए सिद्ध होता है कि पुरुष शिक्षा से महत्वपूर्ण स्त्री शिक्षा है, परन्तु मध्यकालीन परतंत्रता के कारण हम स्त्री

Scanned by CamScanner

शिक्षा को भूल गये और हम प्रतिलोमी बन गये। हमने स्त्री शिक्षा के महत्व के बजाय पुरुष शिक्षा को महत्व दिया और स्त्रियों को केवल भोग की वस्तु मान लिया। आदिनाथ ब्राह्मी – सुन्दरी दोनों को गोदी में बैठाकर सिखाते हैं। इसलिए गणित में लिखते हैं वह उल्टी संख्या हैं। क्योंकि हम 123 में पहले 3,2,1 नहीं लिखकर इससे उल्टा लिखते है, इस संख्या में 1 का स्थानमान शतक है। 2 का स्थानमान दसक है और 3 का स्थानमान ईकाई हैं। हमे पहले शतक 3 लिखना चाहिए फिर दशक 2 लिखना चाहिए एवं इकाई 3 बाद में लिखना चाहिए परन्तु हम इसमें उल्टा शतक 1 लिखते हैं, फिर दशक 2 लिखते

Scanned by CamScanner

है, बादमें इकाई 3 लिखते हैं। इसका कारण यह है कि ब्राह्मी को दायें भाग में बैठाकर के ''अ, आ'' की शिक्षा दी थी जिससे अक्षर (भाषा, लिपि) की गति बायें से दायें ओर होती है और सुन्दरी को बायी गोद मे बैठाकर 1.2 की शिक्षा दी थी, जिसके कारण संख्या की गति दायें भाग से बायें की ओर होती है। इसलिए ''अंकानाम् वामतो गति।'' अर्थात् अंको की गति वाम से होती है। इससे स्वतः प्रमाण सिद्ध हुआ कि ब्राह्मी लिपि का आविष्कार ब्राह्मी के नाम पर हुआ।

आदिनाथ भगवान ने कई खण्ड़ों में व्याकरण शास्त्र को रचा था। परन्तु अभी लिपिबद्ध रूप में सबसे प्राचीनतम व्याकरण पाणिनी व्याकरण

Scanned by CamScanner

है। पाणिनी व्याकरण ईसा पूर्व 500 वर्ष पूर्व लिखा गया। हमारे भारत में "0" व दशमलव पद्धति का आविष्कार हुआ। यदि दशमलव पद्धति 1 से 9 तक आविष्कार नहीं होता तो गणित व विज्ञान का आविष्कार भी नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि गणित व विज्ञान का विकास हमारे भारत में हुआ, परन्तु हम भूल गये। केवल 1200 वर्ष पूर्व एक भारतीय वैज्ञानिक गणित ज्योतिष लेकर अरब गया और अरब से यूरोप और यूनान। वहाँ से जाकर विकास हुआ।

नवीं शताब्दी में नागार्जुन जो भारत के सुप्रसिद्ध रासायनिक वैज्ञानिक थे, उनका ग्रन्थ रसायन शास्त्र था। गणित में महावीर

Scanned by CamScanner

आचार्य का एक शास्त्र है **"गणित सार संग्रह"** जिसमें लघुत्तम समावर्त्त, दीर्घ वर्त्त और अंक गणित व बीज गणित आदि का वर्णन है। 998 में ब्रह्म गुप्त हुए जिनका ग्रन्थ 1200 वर्ष पहले विदेशों में गया। उसमें अंक गणित, बीज गणित रेखा गणित हैं और (पाई) का वर्णन है। भास्कराचार्य जिसने कि न्यूटन से 500 वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण की खोज की। न्यूटन जब पेड़ के नीचे बैठे थे तो एक फल उनके सिर पर गिरा तो उन्होंने सोचा कि फल ऊपर या इधर–उधर जाने की बजाय सीधा नीचे ही क्यों आया और उन्होंने गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त की खोज की और सूत्र दिया।

Scanned by CamScanner

"आकृष्टि शक्तिश्च मही तपायत स्वस्थ गुरु स्वामि मुख स्वशक्या।" (भास्कराचार्य)

भूमि में आकर्षण शक्ति है। अतः आकाश में स्थित भारी वस्तु को भूमि अपनी शक्ति से अपनी ओर खींच लेती है, और हम मानते हैं, पढ़ते हैं और पढ़ाते हैं कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रतिपादन न्यूटन ने किया। दीपक के नीचे अंधेरा हैं। हमारे अन्दर आत्मबल नहीं है। जिससे हम अपने सिद्धान्त को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार ब्रह्म गुप्त ने (पाई) का केवल वर्ग मूल करके छोड़ दिया था। परन्तु भास्कराचार्य ने उसका Value निकाला । 3.14166 और आधुनिक गणित के अनुसार 22/7 = 3.142

Scanned by CamScanner

बताया हैं। आर्कमिडिस ने प्लावन सूत्र, आयतन सूत्र को प्रतिपादित किया था। जबकि इसका जन्मदाता 3000 वर्ष पूर्व अभय कुमार था। जो कि श्रेणिक का पुत्र और महामंत्री था। सूर्य सिद्धान्त का प्रतिपादन सिद्धान्त शिरोमणी व लीलावती में किया। अभय कुमार ने हाथी के वजन करने के लिए आयतन सूत्र का आविष्कार किया। कुछ गरीब ब्राह्मणों की रक्षा के लिए किया था। श्रेणिक उनको कष्ट देना चाहता था उनकी परीक्षा करने के लिए श्रेणिक ने कहा, हाथी का वजन करके ले आओ। इसके लिए अभयकुमार ने आर्कमिडिस जैसा सूत्र दिया था कि तुम एक नौका जल में रखो, फिर नौका

Scanned by CamScanner

में हाथी को रखो। फिर नौका वजन के कारण डूबेगी। जहाँ तक नौका डूबेगी वहाँ तक चिन्ह लगा दो। फिर हाथी को निकाल दो, फिर उस पत्थर का वजन करो, फिर वह हाथी के बराबर वजन का हो जायेगा।

आज तक हम यह जानते है कि हवाई जहाज का आविष्कार राइट ब्रदर्स ने किया था लेकिन पुष्पक विमान जो काफी बड़ा था उसका निर्माण महाभारत काल के पूर्व में हो चुका था। जिसका निर्माण हिन्दू धर्म के अनुसार ब्रह्मा ने किया और कुबेर को दिया। कुबेर से रावण युद्ध करके ले आया। पुष्पक विमान एक योजन (12 k.m.) लम्बा था और चौड़ाई (6 k.m.)आधा योजन। उसमें

Scanned by CamScanner

लाखों मनुष्य,हजारों हाथी, घोड़ा, अस्त्र, शस्त्र, भोजन, बगीचा, व्यायाम शाला, तालाब आदि होते थे।

आर्यभट्ट 476 सन् गुप्त काल में हुए और उन्होंने आर्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। शून्य का आविष्कार वर्षों पूर्व हो गया था। लेकिन शून्य का लिपिबद्ध रूप में, व्यापक रूप में प्रयोग आर्यभट्ट ने दिया। त्रिकोणमिति मे Sin 0(थीटा), Cos 0 (थीटा) को भी आर्यभट्ट ने दिया। पृथ्वी गोल है जो अपनी धुरी पर भ्रमण करती है। इस सिद्धान्त को भी आर्यभट्ट ने सिद्ध किया। द्वितीय आर्यभट्ट 950 में हुए जिसने महान् सिद्धान्त दिया। रॉयल सोसायटी जो कि अभी

Scanned by CamScanner

इग्लैण्ड में है, ऐसी ही संस्था की स्थापना हमारे भारत में 1500 वर्ष पूर्व हुई थी। यहाँ पर केवल विशिष्ट वैज्ञानिक ही सदस्य बन सकते थे। दूसरे के लिए स्थान नहीं था। इन्हें ही विक्रमादित्य के नवरत्न पंडित कहते थे। उसमें एक थे बाराह मिहिर और उन्होंने **बृहत् संहिता** ग्रन्थ लिखा इसमें ऋतु विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि का वर्णन है। सभी विषय के वैज्ञानिक व गुरु हमारे भारत में हुए जिन्होंने सर्वप्रथम वैज्ञानिक, धार्मिक, दार्शनिक आविष्कार किया, इसलिए हमारा भारत विश्व गुरु कहलाया।

हमारा भारत विश्व का गुरु रहा यह केवल भारतीयों का गुणगान नहीं है, ठोस आधार पर हमारा भारत विश्व गुरु रहा। अभी भी

Scanned by CamScanner

हमारे पास क्षमता, शक्ति व उपलब्धि है केवल हमें जगना है। जैसे एक व्यक्ति के घर में गड़ी हुई करोड़ों की सम्पत्ति है लेकिन उसे मालूम नहीं है कि हमारे यहाँ सम्पत्ति है तो जीवन भर केवल गरीब व अज्ञानी रहेगा। यदि मालूम होगा तो परिश्रम कर सम्पत्ति निकालेगा तो धनपति बन जाएगा। इसी प्रकार हमारे पास सब कुछ होते हुए भी जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी है तथापि इधर–उधर भटक रहा है। उसी प्रकार हम हमारे मूल उद्देश्य से भटक गये, हम विछिन्न हो गये। जिस प्रकार वृक्ष मूल से कट जाता है तो कितना भी पानी पिलाने पर वृक्ष सूख जाता है उसी प्रकार हम मूल से कट गये तो कितना भी सिंचित करने

Scanned by CamScanner

पर हम विकसित नहीं हो पायेंगे। इसलिए हमें मूल से जुड़ना है। पुनः हमारी भारतीय सभ्यता संस्कृति के ज्ञान–विज्ञान को पल्लवित करके पुष्पित करना है। हमें दिखा देना चाहिए कि हमारा भारत विश्व गुरु था अभी क्षमता रुप में है, भविष्य में इसे विश्व–गुरु बनाना है और 21 वीं शताब्दी का स्वागत हमें ज्ञान, क्रांति, प्रगति से करना है। उसके स्वागत के लिए यह संगोष्ठी है। यह संगोष्ठी 21 वीं शताब्दी के आह्वान के लिए स्वर्णिम व प्रकाशवान बनाने के लिए आयोजित की गई है और उसके लिए समर्पित है।

(संगोष्ठी में 23–11–99 को आचार्य रत्न कनकनंदी द्वारा दिया गया प्रवचन जिसे

Scanned by CamScanner

सुनकर उपस्थित वैज्ञानिक, प्रोफेसर्स, न्यायविद्, पत्रकार, प्राचार्य, शोधार्थी–गण रोमांचित हुए एवं गौरव से अभिभूत हुए।)

प्रस्तुति – समता गान्धी (सलुम्बर),
सुलोचना, प्रमिला जैन (थाणा)

भाव की पवित्रता से युक्त दूसरे से अपीड़ाकारक व्यवहार सदाचार है। यही धर्म, कानून, राजनीति, समाजनीति का प्राण है। इससे रहित धर्म, कानून, राजनीति प्राण रहित हैं। जिससे दुःख प्राप्त होता है वह अधर्म है तथा जिससे दुःखी जीवों को सुख प्राप्त होता है उसे धर्म कहते हैं। - आ. कनकनंदीजी

Scanned by CamScanner

भारत की कमियाँ

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी

1. **'सत्यमेव जयते'** भारत का आदर्श वाक्य होते हुए भी प्रायोगिक जीवनमें सत्य को महत्व नहीं।

2. **'आत्मा को सबसे बड़ा साक्षी'** भारतीय धर्म ग्रन्थ मानते हुए भी न्याय प्रक्रिया में इसे समुचित महत्व नहीं है। तथा न्याय, सादा, सीधा शीघ्र एवं सत्य निष्ठ नहीं है।

3. **'चारित्रः खलु धर्मः'** को रटते हैं परन्तु प्रायोगिक जीवन में चारित्र के शव को ढ़ोते रहते हैं।

4. **'सम्यग्ज्ञानं प्रमाणं'** का दर्शन मानने वालो के जीवन में न सम्यग्ज्ञान है न प्रामाणिकता

Scanned by CamScanner

ही है।

5. **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का आदर्श देने वालों के परिवार में भी फूट, विघटन, विषमतायें फलती–फूलती हैं।

6. **'विश्व गुरू'** सोने की चिड़िया कहलाने वाला गुलामी, दरिद्रता, अशिक्षा, निष्क्रियता से अभिशप्त है।

7. **'अशोक चक्र'** राष्ट्रीय चिन्ह वालों का प्रगति का चक्र शोक/उदासीनता/निष्क्रियता से स्तम्भित है।

8. **'गोमाता'** बोलने वाले मातृ–ऋण चुकाने के लिए गोमांस विधर्मियों को बेचते हैं।

9. **'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव'** का मंत्र पढ़ने वालों को माता का नंगा नाच सुहाता है, जिन्दा बाप

Scanned by CamScanner

से लट्ठम लट्ठा मरे हुए को पहुँचाते गंगा को व्यवहार में लाते हैं, आचार्य का अचार बनाते हैं, अतिथि को ठेंगा दिखाते हैं।

10. **'धर्म प्रधान देश'** बोलने वाले धर्म का भी मोल–तोल धन से करते हैं।

11. **'ऋषिप्रधान–कृषि प्रधान संस्कृति'** कहने वाले ऋषि एवं कृषि को out of date मानते हैं।

12. प्रचुर श्रम, साधन, धर्म खर्च करके भगवान के मन्दिर बनाने वालों के मनमन्दिर के भगवान राजनेता, अभिनेता, खेलनेता, खलनेता या अभिमान हैं।

13. परम सत्य/अमृत तत्व के शोध–बोध वाले भारत में किस समय क्या, कैसे, क्यों करना, कहाँ, खाना, पीना, बैठना–

Scanned by CamScanner

उठना, चलना, व्यवहार करना, पहनना, विचार करना, निर्णय लेना आदि सामान्य ज्ञान की कमी है।

14. धार्मिक साम्प्रदायों की जानकारी या जीवि कोपार्जनकारी शिक्षा से भले किंचित् रुचि हो परन्तु सत्य–ज्ञान की प्राप्ति की रुचि कम है।

15. परम्परागत धार्मिक सम्प्रदाय रीति रिवाज का भले पालन है परन्तु विवेक सम्मत, युगानुकूल, वैज्ञानिक सत्य का धर्म का पालन कम है।

16. **'संघे शक्तौ कलौ युगे'** को मानने वाला भारत हजारों वर्षों से विघटन के कारण दीन–हीन–पतित परावलम्बी है।

17. **'धर्मो रक्षति रक्षतः'** का सिद्धान्त देने

Scanned by CamScanner

वाला प्रायोगिक जीवन में धर्म शून्य है। इसलिए हजारों वर्षों से असुरक्षित है।

18. **'साहसे वसति लक्ष्मी'** को मानने वाला भारत अच्छे कार्यो के लिए, चुनौती पूर्ण कार्यों के लिए उत्तर कुमार जैसे व्यवहार करता है, जिससे नवीन महान् उपलब्धियो से वंचित रहता है।

19. **'शीलः सर्वत्र भूषणम्'** को प्रधानता देने वाले भारतीय सिनेमा, टी.वी., समाचार पत्र, कॉमिक्स आदि में कुशील, अभद्रता, अशालीनता परोसते हैं।

20. **'पुरूष सिंहमुप्यैति लक्ष्मी' तथा 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष'** रूपी चार पुरूषार्थ का सिद्धान्त देने वाला भारत पुरूषार्थ हीन होने के कारण हजारों वर्ष से परतन्त्र है, छोटे–2

Scanned by CamScanner

पड़ौसी शत्रु राष्ट्र से दबा हुआ है, डरा हुआ है और अभी तक भी शिक्षित बनकर भी गुलाम, नौकर बनना चाहता है।

21. पवित्रता / स्वच्छता में लक्ष्मी का निवास है, ऐसा मानने वाले गली–मोहल्ले, से लेकर सार्वजनिक क्षेत्र, धर्मशाला, मन्दिर तक गन्दगी करते हैं।

22. **'गुणिषु प्रमोदम्'** बोलने वाले दूसरों से यहां तक की गुणियों से भी इर्ष्या, द्वेष, घृणा करते हैं।

23. **'परोपकाराय सतां विभूतयः'** का पाठ पढ़ने वाले परोपकार करना तो दूर रहे, परन्तु जो स्वयं उन्नति, प्रगति करता है, आगे बढ़ता है उसकी भी टांग पकड़कर पीछे खींचते हैं या टांग ही तोड़ देते हैं।

Scanned by CamScanner

24. **'माध्यस्त भावः विपरीत वृत्तौः'** अर्थात् शत्रु से, विपरीत व्यवहार करने वालों से भी साम्य व्यवहार करना चाहिए, ऐसा तोता के जैसे रटने वाले माता–पिता, गुरूजन, भाई. बन्धु से भी अनैतिक व्यवहार करते हैं।

25. **'प्रत्येक आत्मा ही परमात्मा है'** जीवात्म की सेवा ही परमात्मा की सेवा है ऐसा सिद्धान्त मानने वाले व्यवहारिक दैनिक जीवन में परस्पर ठगने में, शोषण करने में, पीड़ा देने में सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।

26. **'सा विद्या या विमुक्तये'** का सिद्धान्त देने वाला भारत नौकर, गुलाम परतन्त्रता के लिए प्रशिक्षण लेता है और देता है।

27. गणित में दशमलव पद्धति, व एक से लेकर शून्य तक का आविष्कार करने वाला

Scanned by CamScanner

भारत अभी तक शून्य ही रहा हैं।

भारत की महानता

1. धर्म–दर्शन–ज्ञान–विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, ध्यान–योग, शिल्प, भाषा, शुद्ध शाकाहार भोजन, संयुक्त परिवार, अतिथि–सत्कार, महापुरूष, प्राकृतिक खनिज, वन्य–सम्पदा, जीव–जन्तु, नदी, समुद्र, पर्वत, भूभाग ऋतुयें आदि, आदि। विस्तार से–अनेकान्त (सापेक्ष सिद्धान्त), स्याद्वाद, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (असंग्रह) उत्तम क्षमा, मृदुता, सरलता, शुचिता (निर्लोभता, अतृष्णा) संयम, तप, त्याग, अकिंचन, वीतरागता, एकान्त–साधना, मौन, प्रतिक्रमण, (स्वदोषों का आत्म विश्लेषण) प्रायश्चित (दोषों का परिहार)

Scanned by CamScanner

प्रत्याख्यान (आगामी दोषों से दूर रहना) विनम्रता, वैयावृत्ति (सवा) ध्यान (योग, मनोनिग्रह, मन को ध्येय वस्तु में स्थिर करना) कर्म–सिद्धान्त, जीव विज्ञान, आध्यात्म–विद्या, मनो–विज्ञान, गुणस्थान (आध्यात्म विकास के सोपान), तत्व–निर्णय, शाश्वतिक, प्राकृतिक, विश्व–व्यवस्था, अणु–विज्ञान, स्वपर–चतुष्टय–सिद्धान्त (चतुः आयाम सिद्धान्त) पर्यावरण की सुरक्षा, विश्व बन्धुत्व, साम्यवाद, निष्काम–कर्मयोग, छःद्रव्य, सप्त तत्व, नव पदार्थ, प्रमाण (दोष रहित पूर्ण ज्ञान) नय (आंशिक सापेक्ष सत्यज्ञान) निक्षेप (आवश्यकतानुसार सापेक्ष निर्णय पद्धति) गुणी जनों की पूज्यता, धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष

Scanned by CamScanner

पुरूषार्थ, ब्रह्मचर्य (विद्यार्थी) गृहस्थ, वानप्रस्थ (व्रती–श्रावक) सन्यास (साधु) आश्रम की व्यवस्था, परोपकार, कार्यकारण सिद्धान्त, सामाजिक व्यवस्था परस्पर–सहयोग आदि के सिद्धान्त।

कमियों के कारण

अति उत्तम उपलब्धियों के कारण उसका दुरूपयोग, अहंमन्यमाना, आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता, नवीन–शोध–बोध–उपलब्धि की आवश्यकता न होना, प्रायोगधर्मी न बनकर रूढ़िवादी/सिद्धान्तवादी परम्परावादी/पूजा–पाठ के बाह्याडम्बरवादी बनना, अन्धविश्वास, धर्मान्धता, नियति–काल–दैवी–कृपा, प्रकोप, –दैववाद–ईश्वर,–कर्तावाद आदि की आड़ में पुरूषार्थ हीन होना, धार्मिक – कट्टरता, धार्मिक

Scanned by CamScanner

मत–मतान्तर, धार्मिक संकीर्णता, प्रभावशालियों का पुण्य के बहाने दुर्बलों को सताना तथा दुर्बलों का पाप के बहाने उसे सहन करना, धार्मिक ठेकेदारों तथा धार्मिक कट्टरपंथिओं का धर्म के नाम पर अन्याय–पक्षपात–शोषण–युद्ध–हत्या–विध्वंश– फूट – पापाचार – अन्धविश्वास– जीव– बलि– प्रथा– नारियों का शोषण आदि का प्रचार–प्रसार करना. सत्य–तथ्य तथा भारत की महानता को जाने–माने–आचरण करे बिना केवल लकीर को पीटना तथा महानता को अपनाये बिना केवल थोथा घमण्ड करना, प्रायोगिक महानता के बिना ग्रन्थों में वर्णित महानता को ही महानता रूप में स्वीकार करना आदि भारत कि कमियों के कारण हैं।

Scanned by CamScanner